# भारत का भौतिक प्रदेश-2

# Physiography of India-2

*बोलेन्द्र कुमार अगम,*
*सहायक प्राध्यापक भूगोल,*
*राजा सिंह कॉलेज सिवान*

*गतांक से आगे .....*

## उत्तरी भारत का मैदान

उत्तर में हिमालय पर्वतमाला तथा दक्षिण में प्रायद्वीपीय पठार के मध्य पूर्व से पश्चिम की ओर उत्तर भारत का विशाल मैदान स्थित है । यह सिंधु, गंगा और ब्रह्मपुत्र नदियों के जलोढ़ निक्षेप से बना हुआ है जिसकी गहराई 1000 से 2000 मीटर है । इस मैदान के पूर्व से पश्चिम लंबाई लगभग 3200 किमी जबकि चौड़ाई 150 से 300 किमी है । उत्तर से दक्षिण की तरफ इस मैदान को तीन भागों में बांट सकते हैं: भाभर, तराई, जलोढ़ मैदान - खादर व बांगर

**भाभर प्रदेश** यह शिवालिक के गिरीपद प्रदेश में सिंधु नदी से तीस्ता नदी तक 8 से 16 किमी की चौड़ाई वाली एक संकरी पट्टी के रूप में स्थित है । इस क्षेत्र में नदियां बड़ी मात्रा में भारी पत्थर, कंकड़, बजरी आदि कर जमा कर देती हैं जिससे पारगम्य चट्टानों का निर्माण होता है । इस क्षेत्र में पहुंचकर अनेक नदियां भूमिगत होकर अदृश्य हो जाती हैं ।

**तराई प्रदेश** यह भाभर के दक्षिण में मैदान का वह भाग है जहां भावर की लुप्त नदियां फिर से भूतल पर प्रकट हो जाती हैं । यह 10 से 20 किमी संकरी पट्टी है । यहां पर अधिकांश भाग दलदल होता है । जलोढ़ के कण भाबर की अपेक्षा छोटे होते हैं । कृषि के लिए यहां वनों का व्यापक विनाश हुआ है ।

**जलोढ़ मैदान** इन जलोढ़ मैदान को दो भागों में बांटते हैं बांगर प्रदेश तथा खादर प्रदेश
बांगर प्रदेश - ऊंचा भाग है जहां नदियों की बाढ़ का जल नहीं पहुंचता । यह पुरानी जलोढ़ मिट्टी होती है ।
खादर प्रदेश - खादर वह नीचा भाग है जहां नदियों की बाढ़ का जल हर साल पहुंच जाता है जिससे नवीन उपजाऊ मिट्टी की परत बिछ जाती है । यहां गहन कृषि संभव होती है ।
इस मैदान में नदी की प्रौढ़ावस्था में बनने वाली अपरदन और निक्षेपण की स्थलाकृतिया जैसे बालू रोधिका, विसर्प, गोखुर झीलें और गुम्फित नदियां पाई जाती हैं । उत्तर भारत के मैदान में बहने वाली विशाल नदियां अपने मुहाने पर विश्व के सबसे बड़े डेल्टा का निर्माण करती है जैसे *सुंदरवन डेल्टा* । हरियाणा और दिल्ली राज्य सिंधु और गंगा नदी तंत्रों के बीच जल विभाजक है । भारत का यह उत्तरी मैदान अपनी उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी के बदौलत एक भारी जनसंख्या का भरण पोषण करती है ।

## भारत का प्रायद्वीपीय पठारी प्रदेश

यह एक अनियमित त्रिभुजाकार आकृति है जिसका आधार दिल्ली एवं राजमहल की पहाड़ियों के बीच उत्तरी मैदान की दक्षिणी सीमा तथा शीर्ष कन्याकुमारी है । यह पठार भारत का प्राचीनतम भूखंड है जिसकी समुद्र तल से औसत ऊंचाई 600 मीटर है । यह पठारी भाग तीनों ओर से पर्वतों द्वारा घिरा हुआ है:
*उत्तर में अरावली, विंध्याचल और सतपुड़ा की पहाड़ियां*
*पश्चिम में पश्चिमी घाट*
*पूर्व में पूर्वी घाट स्थित है*

उत्तर से दक्षिण की ओर इसकी लंबाई 1600 किमी तथा पूर्व से पश्चिम की ओर इसकी चौड़ाई 1400 किमी है । इस प्रदेश को मुख्यतः तीन भागों में बांटा जा सकता है:

- दक्कन का पत्थर
- मध्य उच्च भू-भाग
- उत्तर-पूर्वी पठार

**दक्कन का पठार** यह क्रीटेशस काल में हुए ज्वालामुखी उद्‌गार से निकले हुए लावा से निर्मित है । इसमें प्राचीनतम नीस चट्‌टाने पाई जाती है । चट्‌टाने विखंडित होकर काली कपासी मिट्‌टी का निर्माण करती हैं जो काफी उपजाऊ होती हैं । <u>सीमांकन:</u> यह पठार तापी नदी के दक्षिण में त्रिभुजाकार रूप में फैला हुआ है । उत्तर पश्चिम में सतपुड़ा एवं विंध्याचल, उत्तर में महादेव तथा मकालू, पूर्व में पूर्वी घाट तथा पश्चिम में पश्चिमी घाट इसकी सीमाएं बनाती हैं । इसकी औसत ऊंचाई 600 मीटर है । इस पठार पर महानदी, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी नदियां पश्चिम से पूर्व की ओर प्रवाहित होती है जबकि तापी नदी पश्चिम की ओर प्रवाहित होती है ।

**पश्चिमी घाट** पश्चिमी घाट पर्वत प्रायद्‌वीपीय पठार के पश्चिम में स्थित है । यह उत्तर में तापी नदी से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी तक 1500 किमी लंबाई और लगभग 50-80 किमी की चौड़ाई में फैला हुआ है । इसकी औसत ऊंचाई 900 से 1100 मीटर है । इस पर्वत में कुछ प्रमुख दर्रे स्थित हैं जैसे थालघाट, भोरघाट, पालघाट, सेनकोटा आदि । दक्षिण की ओर इसमें कई पहाड़ियां है, जैसे नीलगिरी, अन्नामलाई, पालनी, इलायची की पहाड़ियां आदि । इन्हीं पहाड़ियों पर दक्षिण भारत के अनेक पर्वत चोटी स्थित है, जैसे
*अनाईमुडी 2696 मीटर (दक्षिण भारत की सर्वोच्च चोटी)*
*डोडा बेटा 2637 मीटर*

**पूर्वी घाट** यह प्रायद्‌वीपीय पठार के पूर्वी किनारे पर स्थित है । यह उड़ीसा के उत्तर-पूर्वी भाग से आरंभ होकर बंगाल की खाड़ी के तट के समांतर चलता हुआ नीलगिरी की पहाड़ियों तक पहुंच गया है । यह पर्वत श्रेणी काफी कटा-फटा है । इसकी औसत ऊंचाई 600 मी. है । महानदी, गोदावरी, कृष्णा तथा कावेरी नदिया इसको काट कर अपना मार्ग बनाती हैं ।

**पूर्वी पठार** पूर्वी पठार में मुख्यतः निम्नलिखित शामिल है:
बघेलखंड का पठार, छोटानागपुर पठार, महानदी की द्रोणी तथा दंडकारण्य

**मध्यवर्ती उच्च भूमि** भारत के मध्य में स्थित उच्च भूमि को मध्यवर्ती उच्च भूमि कहते हैं । यह पश्चिम में अरावली पर्वत से पूर्व में विंध्य की कगार तक विस्तृत है । इसकी दक्षिणी सीमा पर नर्मदा की भ्रंश घाटी स्थित है । यह वनाच्छादित प्रदेश है जिसमें गोंड, संथाल, ओराँव, भील आदि जनजातियां निवास करती हैं । इसमें मध्यप्रदेश तथा राजस्थान और उत्तर प्रदेश के भाग सम्मिलित हैं । इस उच्च भूमि के निम्नलिखित भाग हैं, जैसे अरावली पर्वत, पूर्वी राजस्थान के उच्च भूमि, मध्य भारत का पठार, बुंदेलखंड की उच्च भूमि, मालवा का पठार, विन्ध्य की कगारी भूमि, विंध्य श्रेणी और नर्मदा घाटी आदि इसके प्रमुख अंग हैं ।

**उत्तर पूर्वी पठार** यह भारत के उत्तर-पूर्वी भाग में प्रायद्‌वीपीय पठार का विस्तारित भाग है । हिमालय की उत्पत्ति के समय भारतीय प्लेट उत्तर-पूर्व दिशा में खिसकने से अपार शक्ति का प्रयोग हुआ जिस कारण राजमहल पहाड़ियों तथा मेघालय पठार के बीच एक बड़ा भ्रंश पैदा हो गया । यह प्रायद्‌वीपीय भाग से अलग हो गया । बाद में यह नदियों द्‌वारा निक्षेपित जलोढ़ द्‌वारा पाट दिया गया । वर्तमान समय में मेघालय तथा कार्बी आंगलोंग पठार का अलग अस्तित्व है । मेघालय पठार की तीन प्रमुख जनजातियों के आधार पर इस पठार को तीन भागों में बांटा गया है:

*गारो पहाड़ियां*
*खासी पहाड़ियां*
*जयंतिया पहाड़ियां*
असम की पहाड़ियां भी इसी का विस्तार हैं । छोटानागपुर पठार की भांति मेघालय पठार भी खनिजों में समृद्ध है ।

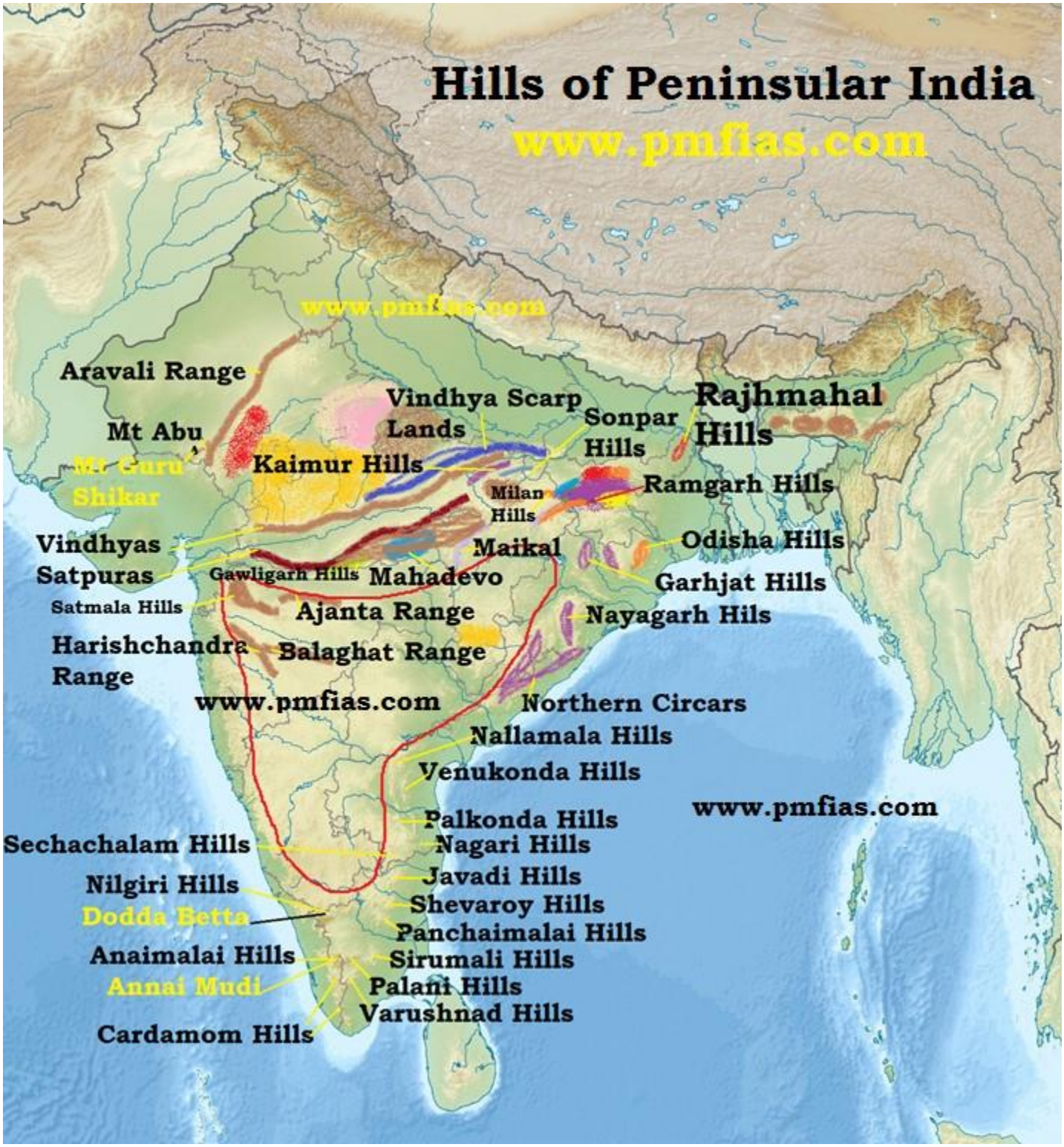


**चित्र स्रोत:** https://www.pmfias.com/hills-of-peninsular-india-aravalis-vindhyas-satpuras-western-ghats-sahyadris-eastern-ghats/

## भारतीय मरुस्थल

विशाल भारतीय मरुस्थल अरावली पहाड़ियों से उत्तर-पश्चिम में स्थित है । यह एक उबड़-खाबड़ भूतल है जिस पर बहुत से अनुदैर्ध्य रेतीले टीले और बरखान पाए जाते हैं । यह एक शुष्क प्रदेश है जहां वनस्पतियों के नाम पर झाड़ियाँ और कटीले वृक्ष पाए जाते हैं । यह माना जाता है कि मेसोजोइक काल में यह क्षेत्र समुद्र का हिस्सा था । इसकी पुष्टि आकल में स्थित का जीवाश्म पार्क में उपलब्ध प्रमाणों तथा जैसलमेर के निकट ब्रह्मसर के आसपास के समुद्री निक्षेप से होती है । यद्यपि इस क्षेत्र की भूगर्भिक संरचना प्रायद्वीपीय पठार का विस्तार है तथापि अत्यंत शुष्क दशाओं के कारण इसकी धरातलीय आकृतियां भौतिक अपक्षय और पवन क्रिया द्वारा निर्मित है । यहां के प्रमुख स्थलाकृतियां बालू के टीले, छत्रक चट्टानें और मरुद्यान हैं । ढाल के आधार पर मरुस्थल को दो भागों में बांटा जा सकता है: सिंध की ओर ढाल वाला उत्तरी भाग तथा कच्छ के रन की ओर ढाल वाला दक्षिणी भाग । यहां की अधिकांश नदियां अल्पकालिक हैं । मरुस्थल के दक्षिणी भाग में बहने वाली लूनी नदी महत्वपूर्ण है । अधिकांश नदियाँ मरुस्थल में ही विलुप्त हो जाती हैं ।

## तटीय मैदान

प्रायद्वीपीय पत्थर के पूर्व तथा पश्चिम में दो संकरे मैदान हैं जैसे:

**पश्चिमी तटीय मैदान** यह मैदान पश्चिमी घाट तथा अरब सागर के तट के बीच गुजरात से कन्याकुमारी के बीच फैला हुआ है । गुजरात में काठियावाड़ तथा कच्छ नामक दो सुविख्यात प्रायद्वीप है । गुजरात के कुछ भाग के अतिरिक्त यह सारा मैदान एक संकरा मैदान है जिसकी औसत चौड़ाई 64 किमी है ।

*मुंबई से गोवा तक इस प्रदेश को कोंकण तट*
*मध्य भाग को कन्नड़ अथवा कनारा तट तथा*
*दक्षिणी भाग को मालाबार तट कहते हैं ।*

कोंकण का मैदान 50 से 80 किमी चौड़ा है । इसके तट पर नदमुख अधिक पाए जाते हैं । लैगून खारे पानी की झील होती है जिसे बालू की रोधिका अथवा भू-जिह्वा समुद्र से अलग करती है । इन्हें स्थानीय भाषा में कयाल कहते हैं । यह मालाबार तट पर पाए जाते हैं । पश्चिमी तटीय मैदान अत्यधिक कटा-फटा होने के कारण प्राकृतिक बंदरगाहों के लिए उपयुक्त हैं जैसे कांडला, मजगांव, जवाहरलाल नेहरू मुंबई, मर्मगाओ, मंगलोर, कोच्चि आदि ।

**पूर्वी तटीय मैदान** यह मैदान पूर्वीघाट तथा बंगाल की खाड़ी के बीच उत्तर में गंगा के मुहाने से कन्याकुमारी तक फैला हुआ है । तमिलनाडु मैदान चौड़ा है जहां इसकी चौड़ाई 120 किमी है । गोदावरी डेल्टा के उत्तर की ओर यह तटीय मैदान सकरा हो जाता है और कहीं-कहीं इसकी चौड़ाई मात्र 32 किमी से कम रह जाती है । यह मैदान महानदी, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी नदियों के द्वारा निर्मित होने के कारण बड़ा उपजाऊ हैं । महानदी तथा कृष्णा नदियों के बीच उत्तरी सरकार तथा कृष्णा, कावेरी नदियों के बीच कोरोमंडल तट तथा उड़ीसा के तटीय क्षेत्र को उत्कल मैदान कहते हैं । इस मैदान में कई लैगून झीलें पाई जाती है जैसे चिल्का झील तथा पुलिकट झील प्रसिद्ध है ।

## द्वीप समूह

भारत में दो प्रमुख द्वीप समूह है: एक बंगाल की खाड़ी में और दूसरा अरब सागर में ।

**बंगाल की खाड़ी के दीप समूह** में लगभग 572 द्वीप है । यह दीप 6° उत्तर से 14 °उत्तर और 92 °पूरब से 94 °पूरब के बीच स्थित हैं । रीची द्वीप समूह और लबरीन्थ यहां के दो प्रमुख द्वीप समूह हैं । बंगाल की खाड़ी के द्वीप को दो श्रेणियों में बांटा जा सकता है: उत्तर में अंडमान और दक्षिण में निकोबार द्वीप । ये द्वीप समुद्र में जल मग्न पर्वतों का उपरी हिस्सा है । कुछ छोटे द्वीपों की उत्पत्ति ज्वालामुखी से जुड़ी है । बैरन आईलैंड नामक भारत का एकमात्र जीवंत ज्वालामुखी है जो निकोबार दीप समूह में स्थित है । यह असंगठित कंकड़, पत्थर और गोलाश्मों से बना हुआ है । इन

द्वीपों के पश्चिमी तट के साथ कुछ प्रवाल निक्षेप तथा खूबसूरत पुलिन है । यहां स्थिति द्वीपों पर संवहनी वर्षा होती है और भूमध्य रेखीय प्रकार की वनस्पति उगती है ।
इस द्वीप समूह की प्रमुख पर्वत चोटी सैडल पीक (उत्तरी अंदमान) है जिसकी ऊंचाई 738 मी है ।

**अरब सागर के द्वीप** में लक्ष्यदीप और मिनीकॉय शामिल है । यह 8 ° उत्तर से 12 ° उत्तर और 71 ° पूर्व से 74 ° पूर्व के बीच बिखरे हुए हैं । यह केरल तट से 280 से 480 किमी दूर स्थित हैं । पूरा दीप समूह प्रवाल निक्षेप से बना है । यहां 36 द्वीप है और इनमें से 11 पर मानव बसाव है । मिनीकॉय सबसे बड़ा दीप है जिसका क्षेत्रफल 453 वर्ग किमी है । पूरा दीप समूह 10 ° चैनल द्वारा दो भागों में बटा हुआ है । उत्तर में आमीनी द्वीप और दक्षिण में कनानोरे द्वीप । इस दीप समूह पर तूफान निर्मित पुलिन है जिस पर अबद्ध गुटिकाए, शिंगिल, गोलाश्मिकाएं आदि पूर्वी समुद्र तट पर पाए जाते हैं । **********

- *सन्दर्भ: भारत का भूगोल: महेश बर्णवाल, सरस्वती भूगोल : डी आर खुल्लर, एनसीईआरटी, इन्टरनेट*

**********